आचार्यबलभद्रविरचितम्

कोरोनाशतकम्

(कोरोनाविषाणुविषयकम् पद्यकाव्यम्)

ISBN : 978-93-5473-671-1

रचयिता

डॉ० बलबहादुर त्रिपाठी 'बलभद्र'

विभागाध्यक्ष–संस्कृत

राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी

Scanned with OKEN Scanner

कोरोनाशतकम्

(CORONASHATAKAM)

(कोरोनाविषाणुविषयकम् पद्यकाव्यम्)

ISBN - 978-93-5473-671-1

प्रकाशन वर्ष :- 2021

रचयिता :

डॉ0 बलबहादुर त्रिपाठी 'बलभद्र'

विभागाध्यक्ष - संस्कृत

राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी

प्रकाशक : स्वयम्

मूल्य :

रु0 100/-

वितरक :

जीवनधारा फाउण्डेशन

280, गली नं0-2, नन्दनपुरा, झाँसी

मुद्रक :

स्वाधीन ऑफसेट

फ्रेन्ड्स कालौनी, ग्वालियर रोड,

झाँसी (उ0प्र0)

पद्यानुक्रमणिका

क्रमांक	पद्यांश	पद्याङ्क
1.	अध्येतुं त्वधुना मनोऽभिलषितम्	82
2.	अन्तःशक्तिसमृद्धिमेव मनवः	32
3.	अस्मद्देशनिवासिनामभिमतः	51
4.	आगच्छन्तु कथं ततस्तु गृहिणः	87
5.	एकः सन् क्षितिदेव ! कर्मविधिभिः	18
6.	कस्माद् देव ! विषाणुतस्सुकृतिनः	16
7.	कश्चिद् शक्तिमदान्वितेव भुवने	39
8.	कोरोनाविषरूप एव भगवन्	22
9.	कोरोनेति विषाणुना हि जगती	33
10.	कोरोना विशिखो ह्यदृश्यतनुगः	36
11.	कोरोनाः कथमेति शोधपुरुषाः	60
12.	कालक्षेपधियः प्रशासन-विधेः	65
13.	काव्येऽस्मिन् रविवंशदिव्यचरितम्	70
14.	कालेऽस्मिन् जनसंकटे बहुतिथे	73
15.	कोरोनाकृतसंकटेऽपि कृतिनः	76
16.	कोरोनाव्यथितेषु सर्वजगती	83
17.	कोरोना-समये प्रवासनगरात्	89
18.	ख्यातं स्वास्थ्यविदां यदस्ति महतः	38
19.	गन्तारोऽध्वनि सर्वकार-जनितम्	95
20.	ग्रामे धर्मवचांसि सन्तु विदुषाम्	100

Scanned with OKEN Scanner

क्रमांक	पद्यांश	पद्याङ्क
21.	चीनात् प्राणविघातको विषतनूः	07
22.	चीनोऽयं जनसख्यया परिवृढः	47
23.	छात्राः बोधकृताः गृहस्थतरुणाः	67
24.	जम्बूद्वीपवसुन्धराश्रयतपः	75
25.	जिष्णुः याति पराभवं विधिवशाद्	42
26.	दायित्वं ननु संकटस्य समये	68
27.	दुर्भाग्यं किमिदं तितिक्षति भुवः	56
28.	दृष्ट्वा देशविभीषिकामभिमतम्	91
29.	देहे केचन कायतुष्टिकपयः	24
30.	देशस्यास्य वरिष्ठमन्त्रिसचिवाः	29
31.	देहे मानवशक्तिरस्ति निहिता	31
32.	देशाः यद्यपि सन्ति वित्ततरुणाः	34
33.	देशाः भौतिकशक्तिरूपगुरुता	58
34.	देशेऽस्मिन्नभिनायकाः अपि भुवः	66
35.	धन्याः भारतवासिनो यदमितान्	96
36.	ध्यायन्ति स्म पुरा तपस्वियतयः	41
37.	धर्मार्थादिभिरेव यान्ति पुरुषाः	50
38.	नीतिज्ञैः समुपासितं जनहितम्	74
39.	नेतारो विषरूपमेनमभयम्	02
40.	नेतुः नीतिचरित्रधर्मरुचिताम्	72

Scanned with OKEN Scanner

क्रमांक	पद्यांश	पद्याङ्क
41.	नैकेऽस्मिन् विषयाः भ्रमन्ति विपणौ	64
42.	पाथेयं सदनं विहाय पथिकाः	88
43.	प्रान्तस्यास्य नियामकास्तु सदयाः	94
44.	फ्रांसस्पेननिभाः विकासशिखरे	45
45.	ब्रह्मन्! संयमिनोऽपि भीतमतयः	13
46.	बुद्धिः चञ्चलतां रुणद्धि मनसः	27
47.	ब्रह्मन्! जीवनमूल्यतो विचलिताः	57
48.	भक्तेः शक्तिरनुत्तमेति गुरुवद्	19
49.	भो! मायेश! समृद्धराज्यनृपतिः	11
50.	भो! भो! सृष्टिनियन्त्रिदेव! परितः	17
51.	भो ! ब्रह्मन्नधिवक्तृरूपविदितः	78
52.	मा भूयाद् भुवने कदापि भगवन्	97
53.	मार्गे चित्तविदारिकापि घटना	90
54.	मुख्यो मन्त्रिवरेषु नीतिनिपुणः	28
55.	मुख्येभ्यो नगरेभ्य एव सुविधा	92
56.	यः शेते स्म पुरा सुवर्णशयने	10
57.	यो वातावरणं प्रदुष्य पृथिवी	40
58.	यस्मिन् ते श्रमिणः क्षियन्ति नगरे	85
59.	युद्धे ये परमाणुशक्तिततरुणाः	54
60.	ये गच्छन्ति गृहाज्जनाः बहिरहो	63

Scanned with OKEN Scanner

क्रमांक	पद्यांश	पद्यांक
61.	योगी योगमतिः प्रदेशसचिवैः	93
62.	राष्ट्रे को भवतोऽतिरिक्तमभितः	04
63.	राष्ट्रं सत्त्वतपस्विनामधिधियाम्	12
64.	राष्ट्रस्यास्य निवासिनो ननु विभो	20
65.	राष्ट्रेऽस्मिन् परिसंस्कृतः कृतिमनाः	25
66.	रूसामेरिकयोः प्रशासनजनैः	43
67.	रूसस्यापि हि शासनस्य मुकुरः	48
68.	रोगाणां शमनाय विश्वगुरुता	52
69.	राष्ट्रेऽस्मिन् विशदे प्रदेशगृहिणः	84
70.	राज्यस्यास्य निवासिनो धनधियः	86
71.	राष्ट्रे साहसधैर्यवृत्तमहितः	98
72.	लोकेऽस्मिन् करुणानिधान ! जनभुक्	15
73.	लोके रूससमानमेव वसुधा	46
74.	लक्ष्याद् भ्रान्तधियो हि राष्ट्रपतयः	55
75.	विश्वे देशनिवासिनोऽद्य वसुधा	05
76.	वेदाः देवपुराणकाव्यरचनाः	14
77.	वाचा देवगिरैव पाण्डुतनयाः	26
78.	विश्वस्मिन् प्रभुता पयोधिरथवा	35
79.	विश्वस्मिन् प्रभुताऽभवत्तु परितः	44
80.	वस्त्रेभ्यो विषतन्तवस्तु परिधेः	62

Scanned with OKEN Scanner

क्रमांक	पद्यांश	पद्याङ्क
81.	विश्वेषामुपकारवृत्तिभरितः	69
82.	विश्वासः स्वजनेषु राष्ट्ररुचिता	79
83.	वैद्याः सेवकवृत्तिनः कृतितुला	80
84.	वैद्याः रोगविषाणुघातकुशलाः	99
85.	शिक्षाक्षेत्रमनीषिणः श्रुतितपः	81
86.	श्रीमन्! शक्तिभृता वराहतनुना	09
87.	श्रीरामस्य यशोऽवतारविषये	71
88.	श्रीविष्णुः परिपालको गलविषः	101
89.	सर्वेषामतिसंख्यया पणकृती	06
90.	सृष्टौ द्वेषधियो विहत्य तनयान्	08
91.	सर्वे बोधविवर्धनाय विधितः	23
92.	स्वास्थ्यं प्राणभृतां पवित्रफलितम्	30
93.	सृष्टिर्या त्रिगुणा पदार्थरुचिरा	37
94.	सृष्टौ सम्प्रति युद्धशक्तिमहिताः	53
95.	सृष्टेः केचन वेदनाय परमम्	59
96.	स्वास्थ्यं देहवतां विषाणुरहितम्	61
97.	सौभाग्यात् परिसंस्कृतो धृतिगुणी	77
98.	ज्ञानं यत् क्षितिवासिनामभिमतम्	03
99.	श्रीविश्वेश ! बभस्ति भोगभुवने	01
100.	विख्यातः परितः प्रशासनरुचिः	49
101.	श्रीमन्नामजपन्त एव यतयः	21

Scanned with OKEN Scanner

स्वतंत्र प्रभात
www.swatantraprabhat.com
जो लिखेगा, वही टिकेगा

कोरोना कर्मयोद्धा -स्वरचित संस्कृत पद्य के माध्यम से कर रहे जागरूक

65 संस्कृत पद्य की रचना कोरोना जागरूकता के लिए की-डॉ .बी.बी. त्रिपाठी

स्वतंत्र प्रभात

महोबा-कबरई विकासखंड के रिवई ग्राम निवासी तथा वर्तमान में राजकीय महिला महाविद्यालय झांसी में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ .बी.बी. त्रिपाठी कोरोना संक्रमण काल में लाकडाउन के प्रारंभ से ही स्वरचित संस्कृत पद्य व उनका हिंदी अनुवाद सोशल मीडिया में पोस्ट कर जन सामान्य में कोरोना विषाणु के संक्रमण के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं साथ ही बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के शोधकर्ताओं को संस्कृत वाङ्मय की व्यापकता पर आनलाइन व्याख्यान दे रहे हैं। शोधार्थी संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित मानवीय मूल्य, आयुष्य -विज्ञान ,सूचना प्रौद्योगिकी, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विषयों पर शोधप्रारूप हेतु तैयार करने हेतु दिशा-निर्देश प्राप्त कर रहे हैं। डॉ त्रिपाठी सम्प्रति कोरोना विषाणु विषयक समस्या पर भी देश वासियों को प्रतिदिन संस्कृत पद्य के माध्यम से जागरूक कर रहे हैं। अब तक उन्होंने 65 संस्कृत पद्य की रचना कोरोना जागरूकता हेतु की है तथा प्रतिदिन एक पद्य की रचना कर सोशल मीडिया में अपलोड कर रहे हैं एवं आकाशवाणी में इन संस्कृत पदों को प्रसारित कर लोगों को जागरूक कर रहे हैं इसके साथ ही अपने गृह जनपद महोबा में भी वह विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से यह पद प्रसारित कर जन सामान्य में जागरूकता फैला रहे हैं डॉक्टर त्रिपाठी द्वारा किए जा रहे इस जागरूकता अभियान की लोग तारीफ कर रहे हैं साथ ही उनके पदों में दिए गए निर्देशों का पालन कर रहे हैं उनके द्वारा रचित संस्कृत पद्य मे लॉकडाउन के दौरान शासन प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करने, शारीरिक दूरी का पालन ,मास्क आदि का प्रयोग करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने ,योग करने ,स्वच्छता रखने तथा प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए सप्तपदी वचन के अनुकरण आदि का उल्लेख रहता है ।

Scanned with OKEN Scanner